Toppersnotes

Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

अर्थशास्त्र

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

पेपर 2 || भाग – 3

SIERRA INNOVATIONS

Index

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	**कल्याणकारी अर्थशास्त्र** ➢ कल्याणकारी अर्थशास्त्र का अर्थ, प्रकृति और दायरा ➢ पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र: राष्ट्रीय लाभांश की नींव और अवधारणा ➢ पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र की आलोचनाएँ और रॉबिन्स-पेरेटियन चुनौती ➢ पेरेटो इष्टतमता: अवधारणा, शर्तें और दक्षता मानदंड ➢ पारेतो सुधार, एजवर्थ बॉक्स, और पारेतो इष्टतमता की सीमाएँ ➢ मुआवज़ा मानदंड:काल्डोर, हिक्स और स्किटोव्स्की - नए कल्याण परीक्षण ➢ सामाजिक कल्याण कार्य: अवधारणा, निर्माण और नैतिक नींव ➢ बर्गसन-सैमुअलसन सामाजिक कल्याण फलन: गणितीय रूप, नीतिगत निहितार्थ, और पारेतो दक्षता के साथ एकीकरण ➢ बाजार विफलता: अवधारणा, कारण और कल्याणकारी निहितार्थ ➢ बाह्यताएं:प्रकार, कल्याण प्रभाव और सुधारात्मक तंत्र ➢ पुरानी बनाम नई कल्याणकारी अर्थव्यवस्था: पिगोवियन, पारेटियन और बर्गसन-सैमुअलसन दृष्टिकोणों की तुलना ➢ कल्याणकारी अर्थशास्त्र की समकालीन प्रासंगिकता: अमर्त्य सेन का क्षमता दृष्टिकोण, सतत कल्याण और नीति एकीकरण	
2.	**सार्वजनिक वित्त और राजकोषीय नीति** ➢ सार्वजनिक वित्त का परिचय –अर्थ, दायरा और महत्व ➢ सार्वजनिक वित्त का दायरा, प्रकृति और विभाग ➢ सार्वजनिक वित्त के सिद्धांत और सिद्धांत ➢ सार्वजनिक राजस्व - अर्थ, स्रोत और वर्गीकरण ➢ कराधान - अर्थ और सिद्धांत ➢ करों के प्रकार - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ➢ कराधान के प्रभाव - उत्पादन, वितरण और विकास पर ➢ भारत में कर संरचना और हालिया सुधार (जीएसटी, डीटीसी, आदि) ➢ सार्वजनिक व्यय - अर्थ, सिद्धांत और वर्गीकरण ➢ सार्वजनिक व्यय के सिद्धांत और प्रभाव (वैगनर, पीकॉक-वाइजमैन, कीनेसियन व्यूज़) ➢ सार्वजनिक ऋण - अर्थ, वर्गीकरण और महत्व ➢ सार्वजनिक ऋण का भार, मोचन और प्रबंधन ➢ सरकारी बजट - अवधारणाएँ, उद्देश्य और संरचना ➢ बजट घाटा – अर्थ, प्रकार, माप और भारतीय संदर्भ ➢ राजकोषीय नीति - अर्थ, उद्देश्य और साधन ➢ राजकोषीय नीति के उपकरण और तकनीकें - कर, व्यय, सार्वजनिक ऋण और घाटे का वित्तपोषण ➢ राजकोषीय और मौद्रिक नीति के बीच समन्वय –उद्देश्य, संघर्ष और भारतीय अनुभव ➢ सार्वजनिक व्यय और राजकोषीय नीति संबंध - प्रभाव, गुणक, और भीड़भाड़	
3.	**सार्वजनिक क्षेत्र और आर्थिक योजना** ➢ प्रस्तावना और समीक्षा ➢ विकास में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका ➢ विकास में निजी क्षेत्र की भूमिका	

	➢ आर्थिक नियोजन: अवधारणा और उद्देश्य ➢ आर्थिक नियोजन के प्रकार ➢ नीति आयोग: संरचना और कार्य ➢ हाल की सरकारी पहल: मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया		
4.	**भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना और विशेषताएं** ➢ भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति, संरचना और विशेषताएँ : एक अवलोकन ➢ भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका: महत्व, संरचनात्मक परिवर्तन और समकालीन चुनौतियाँ ➢ भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योग की भूमिका: विकास, औद्योगिक नीति और समकालीन संरचना ➢ भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की भूमिका: विकास की गतिशीलता, वैश्विक संबंध और नीतिगत चुनौतियाँ ➢ भारत में आर्थिक नियोजन: दर्शन, उद्देश्य और ऐतिहासिक विकास (1951-2025) ➢ भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ: उद्देश्य, रणनीतियाँ और उपलब्धियाँ (1951-2017) ➢ नीति आयोग: संरचना, कार्य, नीतिगत भूमिका और विजन भारत@2047 ➢ भारत में गरीबी: अवधारणाएँ, मापन, रुझान और नीतियाँ ➢ भारत में बेरोजगारी: प्रकार, माप, रुझान और रोजगार नीतियां ➢ भारत में असमानता: अवधारणाएँ, मापन, रुझान और नीतिगत दृष्टिकोण ➢ गरीबी, बेरोजगारी और असमानता: अंतर्संबंध, नीति मूल्यांकन और समावेशी विकास रणनीतियाँ ➢ गरीबी, बेरोजगारी और असमानता: अंतर्संबंध - वैचारिक ढांचा और आर्थिक गतिशीलता ➢ गरीबी, बेरोजगारी और असमानता: अंतर्संबंध - वैचारिक ढांचा और आर्थिक गतिशीलता ➢ नीति मूल्यांकन: गरीबी, बेरोजगारी और असमानता को सामूहिक रूप से संबोधित करने वाली सरकारी पहल (1951-2025) ➢ समावेशी विकास रणनीतियाँ: अवधारणा, रूपरेखा, चुनौतियाँ और आगे का रास्ता		
5.	**सतत और समावेशी विकास** ➢ समावेशी विकास: अर्थ, आयाम और माप ➢ सतत संसाधन प्रबंधन: अवधारणा, तकनीक और आर्थिक प्रासंगिकता ➢ भारत में पर्यावरणीय मुद्दे ➢ हरित अर्थव्यवस्था: अवधारणा, घटक और नीतिगत निहितार्थ ➢ समावेशी और सतत विकास का एकीकरण ➢ समावेशी विकास के लिए सरकारी कार्यक्रम ➢ सतत एवं समावेशी विकास के संकेतक और मापन ➢ समावेशी विकास प्राप्त करने में चुनौतियाँ ➢ समावेशी विकास के लिए मापन और निगरानी ढांचे ➢ नीतिगत सबक, रणनीतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ ➢ सार्वजनिक क्षेत्र, आर्थिक योजना, और सतत एवं समावेशी विकास व्यापक पुनरीक्षण माइंड मैप और परीक्षा फोकस		
6.	**आर्थिक सुधार और वैश्वीकरण** ➢ परिचय, पृष्ठभूमि, और भारत में आर्थिक सुधारों का विकास ➢ 1991 के एलपीजी सुधारों की उत्पत्ति और विशेषताएं: पृष्ठभूमि, उद्देश्य, घटक और संस्थागत ढांचा ➢ उदारीकरण: अवधारणा, दायरा, भारत में नीतिगत उपाय (1991-2025)		

	➢ निजीकरण: अवधारणा, उपकरण, और भारत में कार्यान्वयन (1991-2025) ➢ वैश्वीकरण: अवधारणा, चरण और आयाम - विश्व अर्थव्यवस्था के साथ भारत का एकीकरण ➢ व्यापक आर्थिक स्थिरीकरण और संरचनात्मक सुधार (1991-2000): विनिमय, व्यापार और राजकोषीय समायोजन ➢ वित्तीय क्षेत्र सुधार - बैंकिंग क्षेत्र (1991-2025): नरसिम्हम समितियाँ, विवेकपूर्ण मानदंड, वित्तीय समावेशन और आरबीआई स्वायत्तता ➢ वित्तीय क्षेत्र सुधार - पूंजी बाजार विकास (1991-2025): सेबी, एफआईआई, एफडीआई, कॉर्पोरेट प्रशासन और वैश्विक एकीकरण ➢ राजकोषीय सुधार: घाटा प्रबंधन, एफआरबीएम अधिनियम,और कर सुधार (1991-2025) ➢ वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी): अवधारणा, संरचना, तंत्र और भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव ➢ भारतीय आर्थिक सुधारों में आईएमएफ और विश्व बैंक की भूमिका: संरचनात्मक समायोजन, सहायता कार्यक्रम और नीतिगत निहितार्थ ➢ भारत और ब्रिक्स: सहयोग, चुनौतियाँ और अवसर - व्यापार, वित्त और वैश्विक शासन ➢ क्षेत्रीय और द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग: सार्क, बिम्सटेक, आसियान और भारत की क्षेत्रीय व्यापार नीति ➢ वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था: विकास, रोजगार, असमानता और क्षेत्रीय परिवर्तन पर प्रभाव ➢ सारांश और एकीकरण: आर्थिक सुधार, वैश्वीकरण और भारत का विकास पथ (1991-2025)	

1
UNIT

कल्याणकारी अर्थशास्त्र

कल्याणकारी अर्थशास्त्र का अर्थ, प्रकृति और दायरा

I. प्रस्तावना

A. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का केंद्रीय प्रश्न

- कल्याण अर्थशास्त्र अध्ययन करता है कि संसाधनों का आवंटन किस प्रकार व्यक्तियों और समाज के **आर्थिक कल्याण या खुशहाली को प्रभावित करता है।**
- उन परिस्थितियों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके अंतर्गत **आर्थिक दक्षता और सामाजिक न्याय** सह-अस्तित्व में रहते हैं।
- "कल्याणकारी अर्थशास्त्र सामान्य अर्थशास्त्र का वह भाग है जो आर्थिक नीतियों का मूल्यांकन समुदाय के कल्याण पर उनके प्रभाव के आधार पर करता है।" - ए.सी. पिगौ

II. कल्याण का अर्थ

A. कल्याण - सामान्य अवधारणा

- "कल्याण" से व्युत्पन्न; इसमें **भौतिक समृद्धि, खुशी और संतुष्टि शामिल हैं** ।
- अर्थशास्त्र में → कल्याण के **मापनीय और आर्थिक पहलुओं** पर ध्यान केंद्रित किया जाता है ।

प्रकार	विवरण
1. आर्थिक कल्याण	आर्थिक गतिविधियों - उत्पादन, उपभोग और विनिमय - से प्राप्त कल्याण।
2. गैर-आर्थिक कल्याण	गैर-आर्थिक गतिविधियों से कल्याण - सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक संतुष्टि।

आर्थिक कल्याण ⊂ कुल कल्याण

B. सामाजिक कल्याण

- समाज के सभी व्यक्तियों का समग्र कल्याण।
- पर निर्भर करता है:
  - आय का स्तर और उसका वितरण।
  - वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता।
  - आर्थिक स्वतंत्रता, समानता और स्थिरता।

$$W = f(U_1, U_2, U_3, \ldots, U_n)$$

जहाँ: = U_ii -वें व्यक्ति की उपयोगिता ।

C. आर्थिक कल्याण बनाम सामाजिक कल्याण

आधार	आर्थिक कल्याण	समाज कल्याण
दायरा	केवल भौतिक समृद्धि	सभी प्रकार की खुशहाली
माप	मौद्रिक/आय-आधारित	व्यापक, नैतिक मूल्यों को शामिल करता है
निर्धारकों	उत्पादन, कीमतें, आय	न्याय, स्वतंत्रता, समानता
उदाहरण	जीडीपी वृद्धि	मानव विकास सूचकांक, समानता, सामाजिक न्याय

III. कल्याणकारी अर्थशास्त्र की प्रकृति

A. अर्थशास्त्र की मानक शाखा

- कल्याणकारी अर्थशास्त्र **मानक है** , सकारात्मक नहीं।
- **जो होना चाहिए** उससे सरोकार रखें , न कि केवल **जो है उससे** ।
- **मूल्य निर्णय** शामिल हैं - अच्छे बनाम बुरे, न्यायसंगत बनाम अन्यायपूर्ण परिणामों के बारे में निर्णय।

B. दो आयाम

- **दक्षता आयाम** - संसाधनों का इष्टतम आवंटन।
  पैरेटो दक्षता: किसी को बदतर बनाये बिना किसी को बेहतर नहीं बनाया जा सकता।
- **समानता आयाम** - आय और धन का उचित वितरण।
  असमानता, गरीबी और न्याय को संबोधित करता है।

C. दोहरा उद्देश्य

- **सामाजिक कल्याण को अधिकतम करना** - उच्चतम समग्र संतुष्टि प्राप्त करना।
- **इष्टतम संसाधन आवंटन** - उत्पादन और उपभोग में दक्षता प्राप्त करना।

IV. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का दायरा

A. सूक्ष्म-स्तरीय फोकस (व्यक्तिगत कल्याण)

- उपभोक्ता और उत्पादक के निर्णय कल्याण को कैसे प्रभावित करते हैं।
- विनिमय और उत्पादन में दक्षता।
- पेरेटो इष्टतमता और क्षतिपूर्ति परीक्षण की अवधारणा।

B. मैक्रो-लेवल फोकस (सामाजिक कल्याण)

- आर्थिक विकास, असमानता, सार्वजनिक नीति और बाजार विफलता के कल्याणकारी निहितार्थ।
- विकृतियों को सुधारने में राज्य का हस्तक्षेप।

C. अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र

कार्यक्षेत्र	केंद्र
1. कल्याण के मानदंड	कल्याण की विभिन्न अवस्थाओं की तुलना कैसे करें - पिगौ, पारेतो, काल्डोर -हिक्स, बर्गसन-सैमुएलसन।
2. कल्याण का मापन	उपयोगिता, आय और सामाजिक संकेतक।
3. कल्याण अधिकतमीकरण शर्तें	उपभोग, उत्पादन और आउटपुट मिश्रण में पेरेटो दक्षता।
4. कल्याण और बाजार संरचना	प्रतिस्पर्धा, एकाधिकार और अपूर्ण बाजार के प्रभाव।
5. कल्याण और सरकारी नीति	राजकोषीय नीति, पुनर्वितरण और सार्वजनिक वस्तुओं की भूमिका।

V. कल्याण विश्लेषण के प्रमुख दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	प्रमुख योगदानकर्ता	सार
1. कार्डिनल उपयोगिता दृष्टिकोण	पिगौ, मार्शल	धन/उपयोगिता में मापने योग्य कल्याण।
2. क्रमिक उपयोगिता दृष्टिकोण (परेटियन)	पेरेटो, हिक्स	वरीयता क्रम के आधार पर कल्याण।
3. मुआवजा सिद्धांत	काल्डोर , हिक्स, स्किटोव्स्की	कल्याण का आकलन संभावित मुआवजे के आधार पर किया जाएगा।
4. सामाजिक कल्याण कार्य	बर्गसन, सैमुएलसन	व्यक्तिगत उपयोगिताओं के कार्य के रूप में कल्याण।
5. क्षमता और नैतिक दृष्टिकोण	अमर्त्य सेन	कल्याण = स्वतंत्रता और क्षमता विस्तार।

VI. कल्याण अर्थशास्त्र और मूल्य निर्णय

A. मूल्य निर्णयों की भूमिका

- कल्याण संबंधी तुलना में नैतिक/नैतिक मूल्य स्वाभाविक रूप से शामिल होते हैं।
- विशुद्धतः सकारात्मक अर्थशास्त्र (रॉबिन्स) कल्याण विश्लेषण को अस्वीकार करता है।
- लेकिन कल्याणकारी अर्थशास्त्र मानक विकल्पों (समानता, न्याय) **से बच नहीं सकता ।**

B. मूल्य निर्णयों के उदाहरण

- प्रगतिशील कराधान प्रतिगामी कराधान से "बेहतर" है।
- आय समानता से सामाजिक कल्याण बढ़ता है।
- पर्यावरण संरक्षण से कल्याण बढ़ता है।
- यह समाज के नैतिक रुख को दर्शाता है, शुद्ध तर्क को नहीं।

VII. आर्थिक दक्षता और कल्याण

A. दक्षता के तीन आयाम

प्रकार	अर्थ
1. आवंटन दक्षता	संतुष्टि को अधिकतम करने के लिए आवंटित संसाधन (पेरेटो मानदंड)।
2. उत्पादक दक्षता	न्यूनतम संभव लागत पर उत्पादित वस्तुएं।
3. वितरण दक्षता	वस्तुओं और आय का उचित वितरण।

कुल कल्याण = दक्षता + समानता

B. बाजार तंत्र के साथ लिंक

- पूर्ण प्रतिस्पर्धा → अधिकतम दक्षता सुनिश्चित करती है → कल्याण इष्टतम।
- बाजार विफलता (एकाधिकार, बाह्यताएं, सार्वजनिक वस्तुएं) → कल्याण हानि।
- इसलिए, कल्याणकारी अर्थशास्त्र **राज्य के हस्तक्षेप को उचित ठहराता है** ।

VIII. कल्याण का मापन

तरीका	आधार	सीमाएँ
उपयोगिता दृष्टिकोण	व्यक्तिगत संतुष्टि	व्यक्तियों के बीच तुलनीय नहीं।
आय दृष्टिकोण	प्रॉक्सी के रूप में राष्ट्रीय आय	असमानता, बाह्यताओं की अनदेखी करता है।
सामाजिक संकेतक	एचडीआई, पीक्यूएलआई, गिनी, आदि।	व्यापक लेकिन जटिल.
सामाजिक कल्याण कार्य	उपयोगिताओं का एकत्रीकरण	नैतिक भारांकन की आवश्यकता है।

IX. कल्याणकारी अर्थशास्त्र और नीतिगत निहितार्थ

नीति क्षेत्र	कल्याण फोकस
कर लगाना	पुनर्वितरणात्मक न्याय, समानता।
सार्वजनिक व्यय	सामाजिक लाभ को अधिकतम करना।
सब्सिडी और स्थानांतरण	बाजार की विफलता को ठीक करें।
विनियमन	एकाधिकार पर नियंत्रण रखें, प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करें।
पर्यावरण नीति	सामाजिक कल्याण के लिए बाह्यताओं को आंतरिक बनाएं।

X. कल्याणकारी अर्थशास्त्र की सीमाएँ

- **पारस्परिक उपयोगिता तुलना समस्या** - व्यक्तिगत संतुष्टि मापने योग्य या तुलनीय नहीं है।
- **कल्याण की व्यक्तिपरकता** - नैतिक निर्णय अलग-अलग होते हैं।
- **गतिशील कारकों की उपेक्षा** - दीर्घकालिक विकास प्रभावों की अनदेखी।
- **मापन में कठिनाइयाँ** - कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत कल्याण सूचकांक नहीं।
- **दक्षता और समता के बीच संघर्ष** - दक्षता समता को ख़राब कर सकती है।

XI. कल्याणकारी विचार का विकास (सारांश समयरेखा)

अवस्था	प्रमुख सिद्धांतकार	मुख्य विचार
शास्त्रीय (स्मिथ, बेंथम)	उपयोगितावाद - अधिकतम संख्या के लिए अधिकतम भलाई।	
पिगोवियन (1920 के दशक)	मापनीय कल्याण, राष्ट्रीय लाभांश।	
पारेटियन (1930 के दशक)	क्रमिक उपयोगिता, दक्षता फोकस।	
मुआवजा सिद्धांत (1940 का दशक)	संभावित कल्याण सुधार (काल्डोर -हिक्स)।	
आधुनिक (1950-वर्तमान)	सामाजिक कल्याण कार्य, सेन की क्षमता दृष्टिकोण।	

XII. PYQ ट्रिगर पॉइंट्स

- कल्याण अर्थशास्त्र को भलाई के अध्ययन के रूप में किसने परिभाषित किया? → पिगौ।
- कल्याणकारी अर्थशास्त्र मानकीय है या सकारात्मक? → मानकीय।
- आर्थिक कल्याण किसका भाग है? → सामाजिक कल्याण।
- पेरेटो इष्टतमता का तात्पर्य है? → दक्षता, न कि समानता।
- सामाजिक कल्याण कार्य किससे संबंधित है? → बर्गसन एवं सैमुएलसन।
- मूल्य निर्णयों के लिए कल्याणकारी अर्थशास्त्र की आलोचना किसने की? → रॉबिन्स।
- दक्षता बनाम इक्विटी व्यापार-बंद अवधारणा किसमें दिखाई देती है? → आधुनिक कल्याण सिद्धांत।

XIII. सारांश एकीकरण

- **कल्याणकारी अर्थशास्त्र दक्षता** (आर्थिक) और **समानता** (नैतिक) विश्लेषण के बीच सेतु का काम करता है ।
- यह **पिगोवियन मापनीय कल्याण से लेकर पैरेटियन क्रमिक कल्याण** और **बर्गसन-सैमुएलसन सामाजिक कल्याण कार्यों** तक विकसित हुआ ।
- आधुनिक कल्याण अर्थशास्त्र **नीति, विकास और न्याय को एकीकृत करता है, जो सार्वजनिक अर्थशास्त्र और नीति मूल्यांकन** की आधारशिला बनाता है ।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र = दक्षता + समानता + नैतिकता + नीति।

पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र: राष्ट्रीय लाभांश की नींव और अवधारणा

I. पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र का परिचय

A. आधारभूत भूमिका

- **आर्थर सेसिल पिगौ** (1877-1959) **आधुनिक कल्याण अर्थशास्त्र के संस्थापक हैं** ।
- उनकी मौलिक कृति, "कल्याण का अर्थशास्त्र" (1920) ने **आर्थिक कल्याण** और उसके मापन के अध्ययन के लिए एक **व्यवस्थित ढांचा स्थापित किया।**
- "अर्थशास्त्र का प्राथमिक कार्य समुदाय के आर्थिक कल्याण को बढ़ाना है।" - ए.सी. पिगौ

B. केंद्रीय उद्देश्य

- उन परिस्थितियों का निर्धारण करना जिनके अंतर्गत **आर्थिक कल्याण अधिकतम** हो ।
- **संसाधन उपयोग** , **आय वितरण** और बाजार की खामियों को दूर करने के लिए **सरकारी हस्तक्षेप में दक्षता** पर जोर दिया गया ।

II. पिगोवियन कल्याण का अर्थ और प्रकृति

A. मुख्य आधार

- आर्थिक कल्याण को **व्यक्तिगत उपयोगिता** और **राष्ट्रीय आय** को संकेतक के रूप में उपयोग करके **मौद्रिक रूप में मापा जा सकता है।**
- कल्याण **अधिकतम तब होता है जब राष्ट्रीय लाभांश (कुल उत्पादन)** व्यक्तियों के बीच **समान रूप से** वितरित किया जाता है ।

$$W = f(Y, D)$$

जहाँ:

W = कल्याण,
Y = राष्ट्रीय आय,
D = इसका वितरण।

B. पिगोवियन परिभाषा

- "आर्थिक कल्याण, सामाजिक कल्याण का वह हिस्सा है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की माप के साथ जोड़ा जा सकता है।"
- इस प्रकार , कुल (सामाजिक) कल्याण के विपरीत , **आर्थिक कल्याण मात्रात्मक है ।**

III. राष्ट्रीय लाभांश की अवधारणा

A. अर्थ

- राष्ट्रीय **लाभांश** एक निश्चित अवधि में उत्पादित और समुदाय को उपलब्ध करायी गयी **सभी वस्तुओं और सेवाओं का योग** है (अर्थात राष्ट्रीय आय या उत्पादन)।

$$\text{National Dividend} = \text{Total Net Real Income of the Community}$$

- पिगौ ने **राष्ट्रीय लाभांश में वृद्धि** को **कल्याण सुधार का सूचकांक** माना , बशर्ते इसका **वितरण न्यायसंगत हो ।**

B. राष्ट्रीय लाभांश और कल्याण के बीच संबंध

- **सीधा संबंध :**
  ↑ राष्ट्रीय लाभांश → ↑ आर्थिक कल्याण (यदि वितरण न्यायसंगत है).
- **अप्रत्यक्ष संबंध :**
  असमान वितरण **कल्याण को कम कर सकता है** , भले ही राष्ट्रीय आय बढ़ जाए।

इस तरह:

$$\text{Economic Welfare} = f(\text{National Dividend,Equity of Distribution})$$

C. अधिकतम कल्याण के लिए शर्तें

- **राष्ट्रीय आय का अधिकतमीकरण** - संसाधनों का कुशल उपयोग।
- **आय का उचित वितरण** - असमानता के कारण होने वाली कल्याण हानि को रोकने के लिए।
- **नकारात्मक बाह्य प्रभावों को न्यूनतम करना** - सामाजिक लागत और अपव्यय से बचना।
- **सरकारी हस्तक्षेप** - बाजार की खामियों को दूर करना और आय का पुनर्वितरण करना।

IV. आर्थिक कल्याण का मापन (पिगोवियन दृष्टिकोण)

तरीका	आधार	स्पष्टीकरण
1. मौद्रिक माप	उपयोगिता को पैसे में मापा जाता है	माप की स्थिर इकाई के रूप में धन को मानता है।
2. वास्तविक राष्ट्रीय आय	उत्पादित वस्तुएँ और सेवाएँ	वृद्धि बेहतर कल्याण का संकेत देती है।
3. प्रति व्यक्ति वास्तविक आय	जनसंख्या और कीमतों के लिए समायोजित	व्यक्तिगत कल्याण के लिए प्रॉक्सी.
4. आय वितरण सूचकांक	लोरेंज वक्र, गिनी गुणांक	समानता कल्याणकारी परिणामों को मजबूत बनाती है।

V. पिगौ की धारणाएँ

- **उपयोगिता मापनीय है** और व्यक्तियों के बीच तुलनीय है।
- **मुद्रा** एक सामान्य इकाई के रूप में कार्य करती है।
- **आय की घटती सीमांत उपयोगिता** - पुनर्वितरण से कल्याण बढ़ता है।
- **पूर्ण प्रतिस्पर्धा** कुशल आवंटन सुनिश्चित करती है।
- **अन्य बातें समान रहने पर** - गैर-आर्थिक कारक स्थिर।

VI. कल्याणकारी अर्थशास्त्र का पिगोवियन ढांचा

A. दो मुख्य घटक

- **उत्पादन पक्ष:**
  - राष्ट्रीय लाभांश को अधिकतम किया जाना चाहिए → कुशल संसाधन उपयोग।
- **वितरण पक्ष:**
  - कल्याण न केवल आकार पर बल्कि राष्ट्रीय लाभांश के **वितरण पर भी निर्भर करता है।**

B. उत्पादन और वितरण के बीच संबंध

परिस्थिति	**कल्याणकारी प्रभाव**
↑ आउटपुट + ↑ समानता	अधिकतम कल्याण
↑ आउटपुट + ↓ समानता	अस्पष्ट प्रभाव
↓ आउटपुट + ↑ समानता	सीमित कल्याण लाभ
↓ आउटपुट + ↓ समानता	न्यूनतम कल्याण

अधिकतम कल्याण के लिए **उत्पादन दक्षता और समान वितरण दोनों** आवश्यक हैं।

VII. के बीच विचलन निजी और सामाजिक उत्पाद

A. पिगौ का प्रमुख योगदान

- निजी व्यक्ति **निजी लागत और लाभ के आधार पर निर्णय लेते हैं** , जो **सामाजिक लागत और लाभ से भिन्न हो सकते हैं** ।
- यह विचलन **बाजार की विफलता का कारण बनता है** ।

B. निजी बनाम सामाजिक लागत/लाभ

पहलू	**निजी**	**सामाजिक**
लागत	उत्पादक या उपभोक्ता द्वारा वहन किया गया	समाज पर पड़ने वाले बाहरी खर्चे शामिल हैं
फ़ायदा	निर्णयकर्ता द्वारा आनंदित	इसमें अन्य लोगों को होने वाले लाभ (स्पिलओवर) शामिल हैं

C. उदाहरण

मामला	**बाह्यता प्रकार**	**कल्याण पर प्रभाव**
फैक्ट्री से प्रदूषित हो रही नदी	नकारात्मक बाह्यता	अतिउत्पादन, कल्याण की हानि
टीकाकरण कार्यक्रम	सकारात्मक बाह्यता	कम उत्पादन, कल्याण की हानि
सार्वजनिक शिक्षा	सकारात्मक बाह्यता	सामाजिक उत्पादकता बढ़ाता है

ये भिन्नताएं राज्य के हस्तक्षेप (कर/सब्सिडी) को उचित ठहराती हैं।

VIII. कल्याण अधिकतमीकरण के लिए पिगोवियन नीतिगत नुस्खे

यंत्र	**उद्देश्य**
1. कराधान (पिगोवियन कर)	निजी लागत बढ़ाकर नकारात्मक बाह्य प्रभावों को ठीक करना।
2. सब्सिडी	निजी लागत को कम करके सकारात्मक बाह्य प्रभावों को प्रोत्साहित करें।
3. आय पुनर्वितरण	प्रगतिशील कराधान और सामाजिक सुरक्षा समानता में सुधार करते हैं।
4. बाजार विनियमन	एकाधिकार को रोकें, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करें।
5. सार्वजनिक व्यय	स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण सेवाओं पर।

IX. पिगौ की कल्याणकारी राज्य की अवधारणा

- **"कल्याणकारी राज्य"** की वकालत की जो:
  - समान आय वितरण को बढ़ावा देता है।
  - एकाधिकार और बाह्यताओं को नियंत्रित करता है।

- सार्वजनिक वस्तुएं और सामाजिक सेवाएं प्रदान करता है।
- आर्थिक स्थिरता बनाए रखता है.
- आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने में **राज्य को नैतिक एजेंट के रूप में शामिल करना ।**

X. ग्राफिकल प्रतिनिधित्व (संकल्पनात्मक सारांश)

अक्ष:

- X-अक्ष → राष्ट्रीय लाभांश
- Y-अक्ष → सामाजिक कल्याण

वक्र:

- शुरुआत में ऊपर की ओर ढलान (↑ आय → ↑ कल्याण).
- एक बिंदु से आगे, उच्च असमानता → वक्र का सपाट होना (कल्याण में कमी)।

→ इष्टतम कल्याण वहां होता है जहां **उत्पादन** और **इक्विटी दोनों** संतुलित होते हैं।

पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र की आलोचनाएँ

आलोचक / स्कूल	**आलोचना**	**स्पष्टीकरण**
1. रॉबिन्स (1932)	कल्याण में मूल्य निर्णय शामिल हैं	अर्थशास्त्र सकारात्मक विज्ञान होना चाहिए।
2. पारेटियन अर्थशास्त्री	पारस्परिक उपयोगिता तुलना अमान्य	कल्याण को एकत्रित नहीं किया जा सकता।
3. आधुनिक अर्थशास्त्री	धन उपयोगिता का स्थिर माप नहीं है	मूल्य स्तर में परिवर्तन कल्याण को विकृत करता है।
4. अनुभवजन्य मुद्दे	बाह्य प्रभावों और कल्याणकारी लाभों का आकलन करना कठिन है।	
5. नीतिगत अस्पष्टता	सरकारी हस्तक्षेप पर अत्यधिक निर्भरता से कार्यकुशलता कम हो सकती है।	

XII. पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

- **सार्वजनिक अर्थशास्त्र** और **पर्यावरण नीति** की नींव .
- **बाह्यताओं** और **सुधारात्मक कराधान की अवधारणा को** प्रस्तुत किया गया ।
- आय पुनर्वितरण के लिए **कल्याणकारी राज्य तर्क** स्थापित किया गया ।
- कल्याण के लिए एक **मापनीय, नीति-उन्मुख दृष्टिकोण प्रदान किया गया।**
- आलोचना के बावजूद, यह **लागू कल्याण विश्लेषण** (कर, सब्सिडी, इक्विटी) के लिए केंद्रीय बना हुआ है।

XIII. PYQ ट्रिगर पॉइंट

- कल्याणकारी अर्थशास्त्र का संस्थापक किसे माना जाता है? → ए.सी. पिगौ.
- पिगौ का कल्याणकारी उपाय किस पर आधारित है? → राष्ट्रीय लाभांश और उसका वितरण।
- निजी और सामाजिक उत्पाद के बीच अंतर किसके द्वारा दिया गया? → पिगौ.
- पिगोवियन कर का उपयोग किस लिए किया जाता है? → नकारात्मक बाह्य प्रभावों को ठीक करना ।
- पिगौ के विश्लेषण में मुख्य धारणा? → मापनीय और तुलनीय उपयोगिता।
- कल्याण अधिकतम कब होगा? → राष्ट्रीय लाभांश ↑ और आय समान रूप से वितरित होगी।
- रॉबिन्स द्वारा मुख्य आलोचना? → कल्याणकारी अर्थशास्त्र में मूल्य निर्णय शामिल हैं।

XIV. सारांश एकीकरण

- **पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र मानक अर्थशास्त्र की शुरुआत का** प्रतीक है , जो कल्याण को **राष्ट्रीय आय और न्यायसंगत वितरण के साथ जोड़ता है ।**
- **बाह्यताओं** , **निजी और सामाजिक लागतों के बीच विचलन** , तथा दक्षता बहाल करने के लिए **राज्य के हस्तक्षेप** की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया ।
- हालांकि बाद में **पेरेटो** और **बर्गसन-सैमुएलसन द्वारा इसे परिष्कृत किया गया** , फिर भी पिगौ का कार्य आधुनिक अर्थशास्त्र में **कल्याण विश्लेषण** और **नीति निर्माण की आधारशिला बना हुआ है।**

पिगोवियन कल्याण अर्थशास्त्र की आलोचनाएँ
और रॉबिन्स-पेरेटियन चुनौती

I. प्रस्तावना

A. कल्याणकारी विचार में परिवर्तन

- पिगौ के "कल्याण का अर्थशास्त्र" ने 20वीं सदी के आरंभिक विचार पर अपना दबदबा कायम रखा।
- लेकिन 1930 के दशक तक **लियोनेल रॉबिन्स** और बाद में **विल्फ्रेडो पेरेटो जैसे अर्थशास्त्रियों ने** इसकी **वैज्ञानिक वैधता पर सवाल उठाया** ।
- इस चुनौती ने कल्याणकारी अर्थशास्त्र को **कार्डिनल-मापनीय दृष्टिकोण से क्रमिक-गैर-तुलनात्मक ढांचे** में स्थानांतरित कर दिया।
- "अर्थशास्त्र नैतिकता के क्षेत्र में प्रवेश किए बिना उपयोगिता की पारस्परिक तुलना नहीं कर सकता।" - एल. रॉबिन्स (1932)

II. पिगोवियन फाउंडेशन का सारांश

पिगोवियन कोर मान्यताएँ	अर्थ
1. मापनीय उपयोगिता	व्यक्तिगत संतुष्टि को धन के संदर्भ में मापा जा सकता है।
2. पारस्परिक तुलना	कल्याण को सभी व्यक्तियों में समाहित किया जा सकता है।
3. कल्याण सूचकांक के रूप में मौद्रिक इकाई	आय का उपयोग कल्याण के लिए प्रतिनिधि के रूप में किया जाता है।
4. आय की घटती सीमांत उपयोगिता	पुनर्वितरण से कुल कल्याण बढ़ता है।
5. राज्य की भूमिका	सरकार बाज़ार की विफलता को सुधार सकती है और उसे सुधारना भी चाहिए।

III. रॉबिन्स की आलोचना (टर्निंग पॉइंट)

A. पुस्तक: "आर्थिक विज्ञान की प्रकृति और महत्व पर एक निबंध" (1932)

B. केंद्रीय तर्क

- **अर्थशास्त्र एक सकारात्मक विज्ञान है** , जो यह बताता है कि क्या है, न कि यह कि क्या होना चाहिए।
- **मूल्य निर्णयों** पर आधारित कल्याणकारी अर्थशास्त्र , अर्थशास्त्र से नहीं, बल्कि **नैतिकता** से संबंधित है ।

C. प्रमुख आलोचनाएँ

नहीं।	आलोचना	स्पष्टीकरण
1. मापनीय उपयोगिता की अस्वीकृति	उपयोगिता व्यक्तिपरक है; इसे धन या कार्डिनल इकाइयों में नहीं मापा जा सकता।	
2. पारस्परिक तुलना अमान्य	व्यक्तियों के बीच संतुष्टि की तुलना करने के लिए कोई वैज्ञानिक विधि नहीं है।	
3. कल्याणकारी अर्थशास्त्र = नैतिकता	नैतिक निर्णय की आवश्यकता है (उदाहरण के लिए, "असमानता बुरी है") → अर्थशास्त्र से बाहर.	
4. मूल्य निर्णय की समस्या	"मूल्य-मुक्त अर्थशास्त्र" में नैतिक निर्णयों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।	
5. आय ≠ कल्याण	आय में वृद्धि से खुशी में वृद्धि नहीं हो सकती (यह रुचि, वातावरण आदि पर निर्भर करता है)।	

D. रॉबिन्स की चुनौती का परिणाम

- कल्याणकारी अर्थशास्त्र ने अस्थायी रूप से **अपना सैद्धांतिक आधार खो दिया है** ।
- अर्थशास्त्रियों ने कल्याण तुलना के लिए **मूल्य-मुक्त, क्रमिक तरीकों की तलाश की** → जिससे **पारेटो इष्टतमता** और **नए कल्याण अर्थशास्त्र का जन्म हुआ** ।

IV. पिगौ बनाम रॉबिंस: तुलनात्मक सारांश

आधार	पिगौ	रॉबिंस
अर्थशास्त्र की प्रकृति	मानक का	सकारात्मक
उपयोगिता का मापन	कार्डिनल (मापनीय)	गैर औसत दर्जे का
कंपैरेबिलिटी	पारस्परिक तुलना संभव	संभव नहीं
कल्याण की अवधारणा	धन के माध्यम से मापने योग्य आर्थिक कल्याण	कल्याण व्यक्तिपरक, नैतिक है
नीति भूमिका	अर्थशास्त्र को नीति का मार्गदर्शन करना चाहिए	नीतिगत निर्णय गैर-आर्थिक होते हैं
दृष्टिकोण	नैतिक और निर्देशात्मक	वैज्ञानिक और वर्णनात्मक

रॉबिन्स की आलोचना ने अर्थशास्त्र को **वस्तुनिष्ठता की ओर अग्रसर किया** , लेकिन कल्याण विश्लेषण को **मूल्य-तटस्थ और अपूर्ण भी बना दिया** ।

V. पारेटियन चुनौती: कल्याणकारी अर्थशास्त्र का पुनर्निर्माण

A. पेरेटो का उद्देश्य

- **पारस्परिक उपयोगिता तुलना** पर भरोसा किए बिना **कल्याण विश्लेषण को पुनः प्रस्तुत** करना ।
- उनका समाधान: **पेरेटो दक्षता (इष्टतमता)** → कल्याण में सुधार होता है यदि **कम से कम एक व्यक्ति बेहतर स्थिति में हो और किसी की स्थिति खराब न हो ।**

B. मूल सिद्धांत

$$\Delta W > 0 \text{ if } (U_1 \uparrow, U_2 = \text{same or } \uparrow)$$

→ कोई परिवर्तन **पेरेटो सुधार है** यदि वह किसी अन्य के कल्याण को कम किये बिना किसी के कल्याण को बढ़ाता है।

C. पेरेटो के दृष्टिकोण के लाभ

- **मूल्य-तटस्थ** - नैतिक निर्णय से बचता है।
- **क्रमिक उपयोगिता** - माप पर नहीं, बल्कि वरीयता क्रम पर आधारित।
- **परिचालन मानदंड** - कल्याणकारी परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कर सकता है।
- **वैज्ञानिक** - रॉबिन्स के प्रत्यक्षवाद के साथ संगत।

VI. रॉबिन्स के दृष्टिकोण की प्रमुख आलोचनाएँ

आलोचक / स्कूल	आलोचना
1. पिगौ	अर्थशास्त्र को कल्याण से निपटना चाहिए क्योंकि आर्थिक नीतियां कल्याण को प्रभावित करती हैं।
2. हिक्स और काल्डोर	विशुद्ध रूप से सकारात्मक अर्थशास्त्र नीतिगत परिवर्तनों का मूल्यांकन नहीं कर सकता।
3 . बर्गसन और सैमुएलसन	मूल्य निर्णयों को व्यवस्थित रूप से पुनः एकीकृत करने के लिए सामाजिक कल्याण कार्य की शुरुआत की गई।
4. अमर्त्य सेन	नैतिकता की अनदेखी करने से कल्याण विश्लेषण अधूरा और अवास्तविक हो जाता है।

→ पूर्णतः "मूल्य-मुक्त" अर्थशास्त्र असंभव है; अर्थशास्त्र में स्वाभाविक रूप से **सामाजिक विकल्प शामिल होते हैं** ।

VII. मूल्य निर्णयों की समस्या

A. अर्थ

- **नैतिक विश्वासों या सामाजिक प्राथमिकताओं** को प्रतिबिंबित करने वाले कथन , न कि अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य तथ्य।

उदाहरण:

- "पुनर्वितरण से न्याय बढ़ता है।"
- "विलासिता की वस्तुओं पर कर उचित है।"

B . प्रकार

- **स्पष्ट निर्णय:** खुले तौर पर बताई गई मानक मान्यताएँ।
- **अंतर्निहित निर्णय:** नीतिगत उपकरणों और मान्यताओं के भीतर अंतर्निहित।

C. रॉबिन्स की दुविधा

- यद्यपि उन्होंने उन्हें अस्वीकार कर दिया, लेकिन आर्थिक नीति निर्णयों के लिए मूल्य निर्णय की आवश्यकता होती है → उनके रुख के कारण **कल्याण सिद्धांत में गतिरोध पैदा हो गया** , जब तक कि पेरेटो और बर्गसन ने इसका समाधान नहीं कर दिया।

VIII. रॉबिन्स- पेरेटियन बदलाव के निहितार्थ

रॉबिन्स से पहले	रॉबिंस और पेरेटो के बाद
आय/उपयोगिता के माध्यम से मापने योग्य कल्याण	कल्याण क्रमसूचक और सापेक्ष
नैतिक सिद्धांतों पर आधारित	वरीयता दक्षता के आधार पर
समानता पर ध्यान केंद्रित करें	दक्षता पर ध्यान केंद्रित करें
सरकार नैतिक भूमिका निभाती है	दक्षता पर आधारित सरकार की भूमिका
कार्डिनल उपयोगिता	क्रमिक उपयोगिता

नैतिक कल्याण अर्थशास्त्र (पिगौ) से बदलाव → **वैज्ञानिक कल्याण अर्थशास्त्र (पेरेटो)।**

IX. माप विवाद

A. पिगोवियन दृष्टिकोण:

- धन उपयोगिता का प्रतिनिधि है।
- आय की सीमांत उपयोगिता घटती है → पुनर्वितरण से कल्याण में सुधार होता है।

B. रॉबिन्स का दृष्टिकोण:
- धन से लोगों की संतुष्टि को नहीं मापा जा सकता।
- ₹1 से दो लोगों की उपयोगिता भिन्न है → कोई वस्तुनिष्ठ तुलना नहीं।
- **इसलिए,** रॉबिन्स के मानदंड के तहत पुनर्वितरण को वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

X. बाद के कल्याण सिद्धांतों पर प्रभाव

उत्तराधिकारी सिद्धांत	योगदान
पेरेटो ऑप्टिमलिटी (1930 का दशक)	वस्तुनिष्ठ कल्याण मानदंड (दक्षता)।
काल्डोर -हिक्स क्षतिपूर्ति परीक्षण (1940 का दशक)	पारस्परिक उपयोगिता निर्णय के बिना कल्याण तुलना की अनुमति दी गई।
बर्गसन-सैमुअलसन एसडब्ल्यूएफ (1950 के दशक)	नैतिक और सुसंगत तरीके से मूल्य निर्णयों को पुनः प्रस्तुत किया गया।
अमर्त्य सेन का क्षमता दृष्टिकोण (1970 का दशक)	आय और उपयोगिता से परे कल्याण को व्यापक बनाया गया।

XI. ग्राफिकल व्याख्या (संकल्पनात्मक)

अक्ष:
- X-अक्ष → व्यक्ति A का कल्याण
- Y-अक्ष → व्यक्ति B का कल्याण
- **पिगोवियन दृष्टिकोण:** मापनीय उपयोगिताएँ → तुलनीय कल्याण रेखाएँ।
- **पारेटियन दृष्टिकोण:** केवल गैर-घटते संयोजन → पैरेटो सीमा।
- **रॉबिन्स:** कोई पारस्परिक तुलना नहीं → कल्याण रेखाएँ नहीं खींची जा सकतीं।
- **मात्रात्मक से गुणात्मक कल्याण की ओर बदलाव।**

XII. PYQ ट्रिगर पॉइंट्स
- पिगौ के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की गैर-वैज्ञानिक कहकर आलोचना किसने की? → लियोनेल रॉबिन्स।
- यह आलोचना किस पुस्तक में है? → आर्थिक विज्ञान की प्रकृति और महत्व पर एक निबंध (1932)।
- रॉबिन्स ने किस मान्यता को खारिज किया? → उपयोगिता की पारस्परिक तुलना।
- किसके दृष्टिकोण ने रॉबिन्स के बाद कल्याणकारी अर्थशास्त्र को पुनर्जीवित किया? → पेरेटो।
- पेरेटो मानदंड से बचा जाता है? → मूल्य निर्णय।
- पिगौ का मानना था कि कल्याण को किसके माध्यम से मापा जा सकता है? → राष्ट्रीय लाभांश और वितरण।
- रॉबिन्स ने कल्याणकारी अर्थशास्त्र को किस रूप में वर्गीकृत किया? → मानकीय (अवैज्ञानिक)।

XIII. सारांश एकीकरण
- रॉबिन्स - **परेटियन चुनौती ने कल्याणकारी** अर्थशास्त्र को **नैतिक और मापनीय (पिगोवियन) से वैज्ञानिक और क्रमिक (परेटियन)** में बदल दिया ।
- रॉबिन्स की आलोचना ने पिगौ के नैतिक ढांचे को ध्वस्त कर दिया, तथा **मूल्य-मुक्त अर्थशास्त्र पर जोर दिया, लेकिन पेरेटो ने दक्षता के** एक वस्तुपरक मानदंड के साथ इस क्षेत्र को पुनर्जीवित किया ।
- इस बहस ने कल्याण अर्थशास्त्र को **नैतिकता और विज्ञान के बीच संतुलन स्थापित करने वाले अनुशासन के रूप में स्थापित किया - जिससे आधुनिक कल्याण मॉडल (काल्डोर , हिक्स, बर्गसन, सैमुएलसन, सेन)** के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ ।

पेरेटो इष्टतमता: अवधारणा, शर्तें और दक्षता मानदंड

I. प्रस्तावना

A. पिगोवियन से पैरेटियन कल्याण अर्थशास्त्र में परिवर्तन
- रॉबिन्स की आलोचना के बाद, **विल्फ्रेडो पेरेटो (1848-1923) ने वैज्ञानिक और मूल्य-मुक्त आधार** पर कल्याण विश्लेषण को पुनः तैयार किया ।
- उनका मानदंड - पेरेटो ऑप्टिमलिटी - **आधुनिक कल्याण अर्थशास्त्र की आधारशिला बन गया ।**
- "आर्थिक दक्षता की स्थिति तब प्राप्त होती है जब किसी को बेहतर बनाया जा सकता है, बिना किसी और को बदतर बनाए।" - विल्फ्रेडो पेरेटो

II. पैरेटो ऑप्टिमलिटी का अर्थ

परिभाषा

पेरेटो **इष्टतम (कुशल)** स्थिति वह है जिसमें:
- किसी एक व्यक्ति के **कल्याण को** दूसरे व्यक्ति के कल्याण में **कमी किए बिना बढ़ाना असंभव** है ।

$$\Delta W > 0 \text{ only if } (U_A \uparrow, U_B = \text{same}) \text{ or } (U_A = \text{same}, U_B \uparrow)$$

यदि कोई परिवर्तन किसी की स्थिति को बदतर बनाता है → **पारेटो सुधार नहीं** .

B. वैकल्पिक नाम

- पेरेटो दक्षता
- पेरेटो मानदंड
- इष्टतम आवंटन
- कल्याण दक्षता मानदंड

C. मूल सार

- दक्षता-उन्मुख (न कि इक्विटी-उन्मुख)।
- **क्रमिक उपयोगिता** (वरीयताएँ, माप नहीं) पर आधारित ।
- मूल्य-मुक्त → पारस्परिक उपयोगिता तुलना से बचा जाता है।
- **मौजूदा संसाधनों और प्रौद्योगिकी के आधार पर** अधिकतम समग्र कल्याण सुनिश्चित किया जाता है ।

III. पैरेटो सुधार और इष्टतमता

अवधि	अर्थ
पेरेटो सुधार	कोई भी परिवर्तन जो दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना कम से कम एक व्यक्ति को बेहतर बनाता है।
पेरेटो इष्टतमता	ऐसी स्थिति जहां आगे कोई पेरेटो सुधार संभव नहीं है।

पारेटो सुधारों के माध्यम से कल्याण तब तक बढ़ता है जब तक कि **इष्टतम बिंदु** तक नहीं पहुंच जाता।

उदाहरण:

- दो व्यक्ति A और B वस्तुओं का आदान-प्रदान करते हैं।
- विनिमय से पहले → दोनों पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हैं।
- विनिमय के बाद → दोनों को उपयोगिता प्राप्त होती है → पेरेटो सुधार।
- एक बार पारस्परिक लाभ समाप्त हो जाए तो → पेरेटो इष्टतम।

IV. पेरेटो इष्टतमता और आर्थिक दक्षता

A. दक्षता = पैरेटो इष्टतमता

पेरेटो इष्टतमता तीन परस्पर जुड़े आयामों में **अधिकतम दक्षता का प्रतिनिधित्व करती है:**

दक्षता का प्रकार	विवरण
1. विनिमय दक्षता	उपभोक्ताओं के बीच वस्तुओं का पुनः आवंटन कल्याण में वृद्धि नहीं कर सकता।
2. उत्पादन क्षमता	उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादकों के बीच संसाधनों का पुनः आवंटन नहीं किया जा सकता।
3. उत्पाद-मिश्रण दक्षता	उत्पादित वस्तुओं का संयोजन उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं से मेल खाना चाहिए।

सभी तीन शर्तें एक साथ पूरी होनी चाहिए → **सामान्य आर्थिक दक्षता (पेरेटो ऑप्टिमम)।**

V. शर्त 1 - विनिमय दक्षता

संप्रत्यय

- उपभोक्ताओं के बीच मौजूदा वस्तुओं के वितरण से संबंधित चिंताएँ।
- इष्टतम तब होता है जब दो वस्तुओं के बीच **प्रतिस्थापन की सीमांत दर (एमआरएस) सभी उपभोक्ताओं के लिए समान होती है।**

$$MRS_{XY}^{A} = MRS_{XY}^{B}$$

B. स्पष्टीकरण

- यदि $MRS_A \neq MRS_B$, पारस्परिक रूप से लाभकारी आदान-प्रदान संभव हो।
- समानता आने तक व्यापार जारी रहेगा → पारेटो कुशल विनिमय।

C. ग्राफिकल टूल: एजवर्थ बॉक्स (एक्सचेंज)

- वक्र: A और B के उदासीनता वक्र.
- स्पर्शरिखा बिंदु **अनुबंध वक्र बनाते हैं** → सभी पेरेटो कुशल आवंटन.

VI. शर्त 2 - उत्पादन क्षमता

संप्रत्यय

- उत्पादकों के बीच संसाधनों के आवंटन से संबंधित चिंताएँ।
- इष्टतम तब होता है जब इनपुट (श्रम, पूंजी) के बीच **तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर (एमआरटीएस) सभी फर्मों में समान होती है** ।

$$MRTS_{LK}^{Firm1} = MRTS_{LK}^{Firm2}$$

B. अर्थ

- किसी भी अतिरिक्त इनपुट पुनर्आबंटन से किसी एक फर्म का उत्पादन बढ़ाए बिना दूसरी फर्म का उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता।

C. एडगेवर्थ बॉक्स (उत्पादन)

- वक्र: दो फर्मों के समतुल्यांक।
- स्पर्शरेखा बिंदु **उत्पादन अनुबंध वक्र बनाते हैं** → संसाधनों के सभी कुशल आवंटन का सेट।

VII. शर्त 3 - उत्पाद-मिश्रण दक्षता

A. संप्रत्यय

- यह सुनिश्चित करता है कि **उत्पादित वस्तुओं का मिश्रण उपभोक्ता की प्राथमिकताओं** से मेल खाता हो ।
- यह तब होता है जब उत्पादन में **परिवर्तन की सीमांत दर (एमआरटी)** उपभोग में **प्रतिस्थापन की सीमांत दर (एमआरएस) के बराबर होती है।**

$$MRT_{XY} = MRS_{XY}$$

B. अर्थ

- जिस दर पर समाज एक वस्तु को दूसरी वस्तु में परिवर्तित कर सकता है (उत्पादन) वह दर उस दर के बराबर होती है जिस पर उपभोक्ता उन्हें प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार होते हैं (उपभोग)।
- **उत्पादन और उपभोग दोनों में एक साथ संतुलन** सुनिश्चित करता है ।

VIII. पेरेटो इष्टतमता के लिए सामान्य शर्तें (गणितीय रूप)

1. विनिमय दक्षता

$$MRS^{A}_{XY} = MRS^{B}_{XY}$$

2. उत्पादन क्षमता

$$MRTS^{1}_{LK} = MRTS^{2}_{LK}$$

3. उत्पाद-मिश्रण दक्षता

$$MRS^{A}_{XY} = MRS^{B}_{XY} = MRT_{XY}$$

→ तीनों की संतुष्टि **समग्र पेरेटो इष्टतमता सुनिश्चित करती है** ।

IX. एड्जवर्थ बॉक्स में पैरेटो ऑप्टिमम (एकीकृत फ्रेमवर्क)

अक्ष: माल X (क्षैतिज) और Y (ऊर्ध्वाधर)

- निचले बाएँ → उपभोक्ता A मूल
- ऊपर दाएँ → उपभोक्ता B मूल

अनुबंध वक्र:

- स्पर्शरेखा के सभी बिंदु → पेरेटो कुशल आवंटन।
- वक्र से हटकर कोई भी बिंदु → संभव पेरेटो सुधार।
- अनुबंध वक्र के साथ गति = कुल कल्याण की हानि के बिना पुनर्वितरण।

X. पेरेटो ऑप्टिमम और बाजार तंत्र

बाजार का प्रकार	**पेरेटो परिणाम?**	**स्पष्टीकरण**
संपूर्ण प्रतियोगिता	हाँ	विनिमय और उत्पादन में दक्षता सुनिश्चित करता है।
एकाधिकार/अल्पाधिकार	नहीं	कल्याण हानि (डेडवेट लॉस) उत्पन्न होती है।
बाह्यताएँ मौजूद हैं	नहीं	निजी और सामाजिक लागत के बीच विचलन.
सार्वजनिक माल	नहीं	गैर-बहिष्करणीयता अकुशलता को जन्म देती है।

बाजार की विफलताएं पेरेटो इष्टतमता की प्राप्ति को रोकती हैं → **नीतिगत हस्तक्षेप** की आवश्यकता ।

XI. आरेखीय सारांश (संकल्पनात्मक)

- X-अक्ष → वस्तु X
- Y-अक्ष → अच्छा Y
- **उत्पादन संभावना वक्र (पीपीसी):** एमआरटी दर्शाता है।
- **उदासीनता वक्र (आईसी):** एमआरएस दिखाता है।
- **स्पर्श बिंदु (E):** जहांMRT = MRS → पेरेटो इष्टतम
- ई से परे → किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाए बिना उसे बेहतर बनाना असंभव है।

XII. पेरेटो मानदंड की सीमाएँ

परिसीमन	स्पष्टीकरण
1. वितरणीय इक्विटी की अनदेखी करता है	निष्पक्षता या असमानता के प्रति कोई चिंता नहीं।
2. राज्यों के बीच कल्याण की कोई तुलना नहीं	जब कुछ लोगों को लाभ हो और अन्य को हानि हो तो कल्याण का आकलन नहीं किया जा सकता।
3. स्थैतिक दृष्टिकोण	निश्चित संसाधन और प्रौद्योगिकी मानता है।
4. अवास्तविक पूर्ण प्रतियोगिता धारणा	वास्तविकता में बाजार विकृतियां आम हैं।
5. मूल्य निर्णय अप्रत्यक्ष रूप से पुनः प्रकट होते हैं	पेरेटो ऑप्टिमा के बीच चयन करने में नैतिक प्राथमिकताएं शामिल होती हैं।

XIII. पेरेटो मानदंड का महत्व

- **वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ** → नैतिक पूर्वाग्रह से बचें।
- **आधुनिक कल्याण सिद्धांतों की नींव** → मुआवजा परीक्षण, सामाजिक कल्याण कार्यों का आधार।
- **परिचालन सरलता** → सूक्ष्म एवं सार्वजनिक अर्थशास्त्र में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- **विश्लेषणात्मक परिशुद्धता → सामान्य संतुलन सिद्धांत** (एरो-डेब्रू मॉडल) की रीढ़ बनाता है ।

XIV. PYQ ट्रिगर पॉइंट

- पेरेटो इष्टतमता का प्रतिपादन किसने किया? → विल्फ्रेडो पेरेटो।
- विनिमय दक्षता के लिए शर्त? → $MRS_A = MRS_B$.
- उत्पादन दक्षता की स्थिति? → $MRTS_1 = MRTS_2$.
- उत्पाद-मिश्रण दक्षता की स्थिति? → MRT = MRS.
- पेरेटो सुधार कब संभव है? → एक की हालत बेहतर, कोई की हालत बदतर नहीं।
- पूर्ण प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करती है? → परेटो इष्टतम।
- पेरेटो मानदंड की मुख्य सीमा? → आय वितरण की उपेक्षा करता है।

XV. सारांश एकीकरण

- **पेरेटो इष्टतमता** एक **वैज्ञानिक दक्षता-आधारित कल्याण मानदंड प्रदान करती है** , जो पारस्परिक तुलना से बचती है।
- यह **कुशल विनिमय, उत्पादन और उत्पाद मिश्रण** के माध्यम से **अधिकतम प्राप्य कल्याण को परिभाषित करता है** ।
- हालाँकि, यह **समानता और न्याय की उपेक्षा करता है , जिसके कारण बाद में काल्डोर -हिक्स क्षतिपूर्ति परीक्षण** और **बर्गसन-सैमुएलसन सामाजिक कल्याण कार्यों** जैसे विकास की आवश्यकता पड़ती है ।
- कल्याण दक्षता कल्याण न्याय नहीं है - सामाजिक कल्याण के लिए पेरेटो इष्टतमता आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं है।

पारेतो सुधार, एजवर्थ बॉक्स, और पारेतो इष्टतमता की सीमाएँ

I. प्रस्तावना

A. संदर्भ

- पेरेटो के ढांचे ने **मूल्य-मुक्त कल्याण विश्लेषण की स्थापना की** , लेकिन वास्तविक दुनिया के कल्याण परिवर्तनों में अक्सर **विजेता और हारने वाले शामिल होते हैं** ।
- इसलिए, सिद्धांत को व्यावहारिक नीति से जोड़ने के लिए **पारेटो सुधारों** और उनकी **सीमाओं को समझना महत्वपूर्ण है।**
- "पारेतो सुधार तब होता है जब कम से कम एक व्यक्ति का कल्याण किसी अन्य के कल्याण को कम किए बिना बढ़ता है।" - विल्फ्रेडो पारेतो

II. पैरेटो सुधार - अवधारणा

A. परिभाषा

- आबंटन में परिवर्तन **पेरेटो सुधार है** यदि:
  - कम से कम एक व्यक्ति बेहतर स्थिति में आ जाता है,
  - किसी की हालत ख़राब नहीं होती।

$$\Delta U_A > 0, \Delta U_B \geq 0$$

- यदि आगे कोई पेरेटो सुधार संभव नहीं है → सिस्टम **पेरेटो इष्टतमता तक पहुंच गया है** ।

B. एक सीमा के रूप में पारेटो दक्षता

- **पेरेटो सुधार** → दक्षता की ओर गति.
- **पेरेटो इष्टतमता** → दक्षता की अंतिम स्थिति.
- **पेरेटो उप-इष्टतमता** → वर्तमान स्थिति जहां आगे सुधार संभव है।

C. पेरेटो सुधार के लिए शर्तें

- व्यापार या पुनर्आबंटन के माध्यम से पारस्परिक लाभ।
- दूसरों को बाहरी नुकसान न पहुँचाना।
- बिना हानि के माल/संसाधनों के पुनःआबंटन की संभावना।
- कोई बाह्यता या विकृति नहीं।

D. उदाहरण

परिदृश्य	नतीजा
दो उपभोक्ताओं के बीच आदान-प्रदान	दोनों को लाभ → पेरेटो सुधार।
तकनीकी नवाचार	किसी को नुकसान पहुंचाए बिना उत्पादन में वृद्धि → पेरेटो सुधार।
प्रदूषण नियंत्रण नीति उत्सर्जन को कम करती है	समाज को उद्योग की हानि से अधिक लाभ होता है → लगभग-पैरेटो सुधार।

III. एड्जवर्थ बॉक्स विश्लेषण (पेरेटो सुधार और दक्षता)

A. उद्देश्य

- दो व्यक्तियों या उत्पादकों के बीच **विनिमय दक्षता** और **पेरेटो सुधार** दिखाने के लिए ग्राफिकल उपकरण ।

B. एड्जवर्थ बॉक्स की संरचना

अक्ष	प्रतिनिधित्व करता है
X- अक्ष	वस्तु X की मात्रा
शाफ़्ट	वस्तु Y की मात्रा
मूल O (नीचे-बाएँ)	उपभोक्ता A की उत्पत्ति
मूल O' (ऊपर-दाएं)	उपभोक्ता B की उत्पत्ति
उदासीनता वक्र (IC_A, IC_B)**	A और B के लिए उपयोगिता स्तर

C. पारस्परिक रूप से लाभकारी क्षेत्र (लेंस के आकार का क्षेत्र)

- **IC_A और IC_B के बीच प्रतिच्छेदन** क्षेत्र → विनिमय के माध्यम से दोनों को लाभ हो सकता है।
- **इस लेंस क्षेत्र के भीतर** कोई भी हलचल = पेरेटो सुधार।
- अनुबंध **वक्र (स्पर्श बिन्दुओं का बिन्दुपथ)** सभी **पेरेटो कुशल** आवंटनों का प्रतिनिधित्व करता है।

D. एड्जवर्थ बॉक्स आरेख (संकल्पनात्मक सारांश)

1. प्रारंभिक बिंदु: मनमाना प्रारंभिक बंदोबस्ती (कुशल नहीं)।
2. एक्सचेंज **लेंस क्षेत्र के साथ चलता है** → पारस्परिक लाभ (पेरेटो सुधार)।
3. उदासीनता वक्रों के बीच स्पर्शरेखा → **पेरेटो इष्टतम** (कोई और सुधार संभव नहीं)।

गणितीय रूप से:

$$MRS^{A}_{XY} = MRS^{B}_{XY}$$

E. उत्पादन तक विस्तार

- जब एड्जवर्थ बॉक्स का उत्पादन के लिए उपयोग किया गया:
  - आइसोक्वेंट उदासीनता वक्रों का स्थान लेते हैं।
  - आइसोक्वेंट के बीच स्पर्शरेखा → **पेरेटो-कुशल संसाधन उपयोग** .

$$MRTS^{Firm1}_{LK} = MRTS^{Firm2}_{LK}$$

IV. पेरेटो सुधार मानदंड की सीमाएँ

A. सैद्धांतिक सीमाएँ

परिसीमन	स्पष्टीकरण
1. वास्तविक दुनिया में अव्यावहारिक	लगभग हर नीति किसी न किसी समूह को नुकसान पहुंचाती है; शुद्ध पेरेटो सुधार दुर्लभ हैं।
2. वितरण की अज्ञानता	असमानता की अनदेखी - दक्षता निष्पक्षता सुनिश्चित नहीं करती।
3. स्थैतिक और आंशिक	इसमें निश्चित संसाधनों को माना गया है; गतिशील विकास पर कोई विचार नहीं किया गया है।

4. पारस्परिक तुलना का अभाव	जब कुछ लोगों को लाभ होता है और अन्य को हानि होती है तो कल्याण का आकलन नहीं किया जा सकता।
5. मल्टीपल पैरेटो ऑप्टिमा	निर्णय के बिना उनमें से चयन नहीं किया जा सकता ।

B. व्यावहारिक सीमाएँ

- **नुकसान पहुंचाए बिना पुनर्वितरण असंभव है** (कर, हस्तांतरण)।
- **सार्वजनिक नीतियां** (जैसे, सब्सिडी) कुछ लोगों को दूसरों की कीमत पर लाभ पहुंचाती हैं।
- **बाह्यताएं और सार्वजनिक वस्तुएं,** पारेटो के दायरे से परे कल्याण को विकृत कर देती हैं।
- **शक्ति असमानताएं** पेरेटो सुधारों के लिए आवश्यक स्वैच्छिक आदान-प्रदान को रोकती हैं।

C. इक्विटी-दक्षता दुविधा

- पेरेटो मानदंड **कुल दक्षता को अधिकतम करता है** , न कि **समतापूर्ण कल्याण को** ।
- उदाहरण: असमान आय वितरण पेरेटो कुशल हो सकता है लेकिन सामाजिक रूप से अवांछनीय हो सकता है।

पेरेटो इष्टतम ≠ सामाजिक रूप से इष्टतम.

V. पेरेटो फ्रंटियर (या दक्षता फ्रंटियर)

A. संप्रत्यय

- संसाधन और प्रौद्योगिकी दिए जाने पर दो व्यक्तियों के लिए **अधिकतम संभव कल्याण संयोजनों को** दर्शाने वाला ग्राफ ।

अक्ष:

- X-अक्ष → A का कल्याण
- Y-अक्ष → B का कल्याण

वक्र आकार:

- ऊपर की ओर ढलान, मूल की ओर उत्तल → A और B के कल्याण के बीच व्यापार-बंद।

व्याख्या:

- सीमांत पर कोई भी बिंदु = पेरेटो कुशल।
- सीमांत के अंदर बिंदु = अकुशल.
- बाहर के बिंदु = अप्राप्य।

B. गणितीय निरूपण

$$W_A = f(W_B)$$
$$\frac{dW_A}{dW_B} < 0$$

→ एक के कल्याण को बढ़ाने के लिए , दूसरे को खोना होगा → आगे कोई पेरेटो सुधार नहीं।

VI. सामान्य संतुलन प्रणाली में पेरेटो इष्टतमता

A. बाजारों का एकीकरण

- पूर्णतः प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में:
  - उपभोक्ता उपयोगिता को अधिकतम करते हैं → विनिमय दक्षता।
  - उत्पादक उत्पादन को अधिकतम करते हैं → उत्पादन दक्षता।
  - कीमतें सीमांत लागत के बराबर → उत्पाद-मिश्रण दक्षता।
- इस प्रकार, **सामान्य संतुलन = पेरेटो कुशल** परिणाम।

B. एरो-डेब्रू प्रमेय

- पूर्ण प्रतिस्पर्धा, पूर्ण बाजार और उत्तल वरीयताओं के अंतर्गत:
  - प्रत्येक प्रतिस्पर्धी संतुलन पेरेटो कुशल होता है।
  - प्रत्येक पेरेटो कुशल आवंटन को कुछ प्रतिस्पर्धी संतुलन (प्रथम और द्वितीय कल्याण प्रमेय) द्वारा बनाए रखा जा सकता है।

VII. पारेटो अकुशलता से कल्याण की हानि

A. डेडवेट लॉस अवधारणा

- यह तब होता है जब संसाधनों का गलत आवंटन किया जाता है (जैसे, एकाधिकार, कराधान, बाह्यताएं)।
- **कुल अधिशेष की हानि** होती है → पेरेटो इष्टतम से विचलन.

B. ग्राफिकल आइडिया

- मांग और आपूर्ति वक्रों के बीच का त्रिभुज (हारबर्गर त्रिभुज) कल्याण हानि को दर्शाता है।
- क्षेत्र का आकार = अकुशलता का परिमाण.

VIII. नीतिगत निहितार्थ

प्रसंग	पेरेटो दृष्टिकोण	नीति उपकरण
एकाधिकार	अप्रभावी	अविश्वास कानून
बाहरी कारक	अप्रभावी	पिगोवियन कर/सब्सिडी
सार्वजनिक माल	अप्रभावी	सरकारी प्रावधान
आय असमानता	संबोधित नहीं	पुनर्वितरण (पेरेटो दायरे से परे)

पेरेटो दक्षता आधार रेखा बनाती है; नीतियां अर्थव्यवस्था को **दक्षता सीमा के करीब ले जाने का प्रयास करती हैं** ।

IX. पोस्ट- पैरेटियन विकास

अर्थशास्त्री	विकास	केंद्र
काल्डोर -हिक्स (1940 के दशक)	मुआवजा सिद्धांत	संभावित कल्याण सुधार
स्किटोव्स्की (1941)	दोहरा मानदंड	काल्डोर -हिक्स में सुधारित उलटफेर
बर्गसन-सैमुअलसन (1950 के दशक)	सामाजिक कल्याण कार्य	नैतिक एकत्रीकरण को पुनः प्रस्तुत किया गया
अमर्त्य सेन (1970 के दशक)	क्षमता दृष्टिकोण	स्वतंत्रता और न्याय-आधारित कल्याण

इनमें पेरेटो विश्लेषण को उन मामलों तक विस्तारित किया गया जहां **विजेता और हारने वाले एक साथ मौजूद होते हैं** ।

X. ग्राफिकल इंटीग्रेशन: पैरेटो लेंस और फ्रंटियर

1. एड्जवर्थ बॉक्स: पेरेटो-कुशल अनुबंध वक्र की ओर गति दर्शाता है।

2. पेरेटो फ्रंटियर: अधिकतम प्राप्य कल्याण संयोजनों का प्रतिनिधित्व करता है।

3. एरो-डेब्रू फ्रेमवर्क: पेरेटो इष्टतमता को प्रतिस्पर्धी संतुलन से जोड़ता है।

साथ में **आधुनिक कल्याण अर्थशास्त्र की मुख्य विश्लेषणात्मक संरचना** को परिभाषित करें ।

XI. PYQ ट्रिगर पॉइंट

- पेरेटो सुधार का मतलब क्या है? → कम से कम एक व्यक्ति बेहतर स्थिति में हो, कोई भी बदतर स्थिति में न हो।
- अनुबंध वक्र क्या दर्शाता है? → सभी पेरेटो-कुशल आवंटनों का सेट।
- एड्जवर्थ बॉक्स का उपयोग किसलिए किया जाता है? → विनिमय और उत्पादन दक्षता।
- पेरेटो मानदंड की उपेक्षा करता है? → आय वितरण और इक्विटी।
- पेरेटो सीमांत दर्शाता है? → अधिकतम कल्याण संयोजन संभव है।
- पेरेटो इष्टतम को प्रतिस्पर्धी संतुलन से किसने जोड़ा? → एरो और डेब्रू।
- डेडवेट हानि के उपाय? → अकुशलता के कारण कल्याण की हानि।

XII. सारांश एकीकरण

- **पारेटो सुधार** पारस्परिक रूप से लाभकारी परिवर्तनों के माध्यम से कल्याणकारी लाभों को मापता है।
- **एड्जवर्थ बॉक्स** विनिमय और उत्पादन दक्षता को ग्राफिक रूप से दर्शाता है।
- **पेरेटो इष्टतमता आर्थिक दक्षता** को परिभाषित करती है , लेकिन **इक्विटी, पुनर्वितरण और मिश्रित कल्याण परिणामों को** संभालने में विफल रहती है ।
- इस सीमा के कारण **"नये कल्याण अर्थशास्त्र"** (काल्डोर -हिक्स, बर्गसन-सैमुएलसन) का उदय हुआ, जिसने नैतिकता और सामाजिक विकल्प को पुनः प्रस्तुत किया।
- पेरेटो के सिद्धांत ने दक्षता को परिपूर्ण किया, लेकिन न्याय को नजरअंदाज कर दिया - बाद में कल्याणकारी अर्थशास्त्र ने उन्हें फिर से एकजुट करने का लक्ष्य रखा।

मुआवज़ा मानदंड:काल्डोर, हिक्स और स्किटोव्स्की - नए कल्याण परीक्षण

I. प्रस्तावना

A. पारेतो से नई कल्याणकारी अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण

- **पेरेटो मानदंड** कल्याणकारी परिवर्तनों का आकलन नहीं कर सकता जब **कुछ को लाभ होता है और अन्य को हानि होती है** ।
- **काल्डोर -हिक्स- सितोव्स्की क्षतिपूर्ति परीक्षण** (1939-1941) का उद्देश्य **पारस्परिक उपयोगिता तुलना की आवश्यकता के बिना कल्याण विश्लेषण का विस्तार करना था** ।
- इन्हें **"नया कल्याण अर्थशास्त्र" के नाम से जाना जाता है।**
- "एक नीति सामाजिक कल्याण को बढ़ाती है यदि लाभ पाने वाले, सिद्धांत रूप में, हानि उठाने वालों की क्षतिपूर्ति कर सकें और फिर भी बेहतर स्थिति में रहें।" - काल्डोर (1939)

II. पृष्ठभूमि: पेरेटो सीमा

A. पेरेटो की समस्या

- पेरेटो इष्टतमता कल्याण तुलना की अनुमति केवल तभी देती है जब:
  - किसी को लाभ होता है, **किसी को हानि नहीं होती** ।
- वास्तविक दुनिया की नीतियों में (कराधान, व्यापार, निवेश):
  - **कुछ को लाभ, कुछ को हानि** → पेरेटो मानदंड मौन.

B. विस्तार की आवश्यकता

- अर्थशास्त्रियों ने एक **"संभावित" कल्याणकारी सुधार** उपाय की मांग की - जहां मुआवजा देकर सभी को बेहतर बनाया जा सके, भले ही वास्तव में भुगतान न किया गया हो।

III. काल्डोर का मुआवजा मानदंड (1939)

A. परिभाषा

- नीतिगत परिवर्तन से कल्याण **में सुधार होता है ,** यदि **लाभ पाने वाले लोग हानि उठाने वालों की** क्षतिपूर्ति **कर सकें** , तथा फिर भी बेहतर स्थिति में बने रहें।

$$\Delta W > 0 \text{ if } (\Delta U_G > \Delta U_L)$$

B. व्याख्या

- वास्तविक मुआवजे की आवश्यकता नहीं है; केवल संभावित मुआवजा ही मायने रखता है।
- **काल्पनिक मुआवजे का** उपयोग करके नैतिक मूल्य निर्णयों से बचता है ।

C. ग्राफिकल स्पष्टीकरण (वैचारिक)

अक्ष:

- X-अक्ष → समूह A (लाभार्थी) की उपयोगिता
- Y-अक्ष → समूह B (हारे हुए) की उपयोगिता

1. प्रारंभिक बिंदु → नीति-पूर्व स्थिति।
2. नीति परिवर्तन → A की उपयोगिता बढ़ती है, B की घटती है।
3. यदि A का लाभ > B की हानि → संभावित क्षतिपूर्ति → कल्याण ↑ ।

सामाजिक उदासीनता वक्र में **स्पर्शीय बदलाव सुधार का संकेत देता है।**

D. लाभ

- कल्याण विश्लेषण को **यथार्थवादी नीति संदर्भों तक विस्तारित करता है** ।
- **मूल्य-मुक्त** और **क्रमसूचक** ; पारस्परिक तुलना से बचा जाता है।
- लागत-लाभ विश्लेषण के लिए **परिचालन उपकरण** प्रदान करता है ।
- **अनुप्रयुक्त कल्याण अर्थशास्त्र** के लिए फाउंडेशन (परियोजना मूल्यांकन)।

E. आलोचनाएँ

- **वितरणात्मक समानता** की अनदेखी - नीति गरीबों को नुकसान पहुंचा सकती है और फिर भी परीक्षण पास कर सकती है।
- मुआवज़ा **काल्पनिक है** , वास्तविक नहीं।
- उलटने पर **विरोधाभासी परिणाम** उत्पन्न हो सकते हैं (स्किटोव्स्की द्वारा संबोधित)।
- धन के स्थिर मूल्य को मानते हुए, **धन के संदर्भ** में कल्याण को मापा जाता है ।

IV. हिक्स का मुआवजा मानदंड (1939)

A. परिभाषा

- नीति परिवर्तन **अवांछनीय है** यदि **हारने वाले पक्ष लाभ पाने वालों को रिश्वत देकर उसे रोकने में** सफल हो जाएं और फिर भी वे बेहतर स्थिति में रहें।
- काल्डोर परीक्षण का व्युत्क्रम .

$$\Delta W < 0 \text{ if (Losers willing to pay to prevent change)}$$

B. संयुक्त व्याख्या

- यदि काल्डोर परीक्षण → पास हो जाता है (लाभ पाने वाले, हारने वालों की भरपाई कर सकते हैं) और
  हिक्स परीक्षण → विफल हो जाता है (हारने वाले, लाभ पाने वालों को इसे रोकने के लिए रिश्वत नहीं दे सकते) तो
  → नीति **कल्याण में सुधार लाने वाली है** ।